

कक्षा 11 · हिंदी (ऐच्छिक) · अंतरा भाग 1 · गद्य खंड

पाठ 3

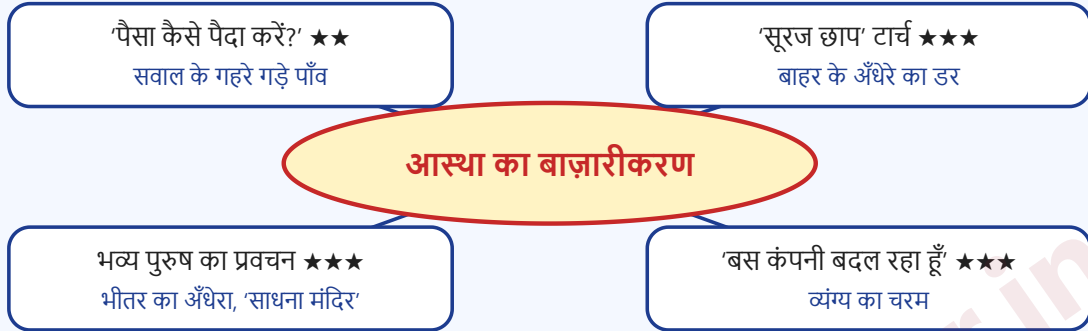
टार्च बेचनेवाले

सूरज छाप

हरिशंकर परसाई · व्यंग्य · NCERT अंतरा भाग 1 · CBSE 002 · 2026-27

अँधेरे का डर, प्रकाश का धंधा

पाठ का मानचित्र (★ = परीक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण)



लेखक परिचय

हरिशंकर परसाई (सन् 1922–1995)। जन्म **जमानी** गाँव, ज़िला होशंगाबाद (म.प्र.)। नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए.; कुछ वर्ष अध्यापन, 1947 से स्वतंत्र लेखन; जबलपुर से 'वसुधा' पत्रिका। **व्यंग्य विधा को साहित्यिक प्रतिष्ठा** दी; समाज की विसंगतियों-विडंबनाओं पर करारी चोट, 'गुदगुदाते हुए झकझोरने' वाले व्यंग्य; बोलचाल के शब्दों का सतर्क प्रयोग। **कृतियाँ**: हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे (कहानी); रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज (उपन्यास); तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, सदाचार की तावीज़, शिकायत मुझे भी है (निबंध); वैष्णव की फिसलन, तिरछी रेखाएँ, **ठिठुरता हुआ गणतंत्र, विकलांग श्रद्धा का दौर** (व्यंग्य-लेख)। 'परसाई रचनावली' छह भागों में।

★ **परीक्षा-सुझाव: परीक्षा में:** व्याख्या-योग्य अंश: अँधेरे के डर का भाषण, भव्य पुरुष का प्रवचन ('प्रकाश बाहर नहीं है...'), 'तुम कुछ भी कहलाओ, बेचते तुम टार्च हो', अंतिम वाक्य। NCERT 8 (आशय) और 5 (दोनों धंधों में फ़र्क) सबसे महत्वपूर्ण।

सार: चौराहों पर टार्च बेचने वाला लेखक को दाढ़ी बढ़ाए, लंबे कुरते में मिलता है: 'अब तो आत्मा के भीतर टार्च जल उठा है।' वह किस्सा सुनाता है: पाँच साल पहले वह और उसका दोस्त 'पैसा कैसे पैदा करें?' सवाल से परेशान होकर अलग-अलग दिशाओं में किस्मत आजमाने निकले, पाँच साल बाद उसी जगह मिलने का वादा करके। उसने 'सूरज छाप' टार्च बेचने का धंधा किया: लोगों को अँधेरे, साँप, शेर-चीतों का डर दिखाकर टार्च बेचना। दोस्त नहीं आया; खोजते हुए वह एक शहर में मंच पर रेशमी वस्त्रों, लंबी दाढ़ी वाले 'भव्य पुरुष' को प्रवचन देते देखता है: आत्मा के अंधकार का डर दिखाकर 'साधना मंदिर' में ज्योति जगाने का आह्वान। वही उसका दोस्त है, बँगले-कार का मालिक। टार्च वाले की बातों से वह मानता है: 'मेरी कंपनी नयी नहीं है, **सनातन** है।' दो दिन उसके साथ रहकर टार्च वाला अपनी टार्च की पेटी नदी में फेंक देता है: 'धंधा वही करूँगा, यानी टार्च बेचूँगा। **बस कंपनी बदल रहा हूँ।**'

3.1 व्यंग्य का विश्लेषण ★★★

प्रतीक

प्रतीक	अर्थ
टार्च	लोगों के डर का समाधान बेचने का साधन; बाद में 'धर्म/आस्था' का उत्पाद
'सूरज छाप'	सूरज प्रकाश का सबसे बड़ा स्रोत; ग्राहक को लगे कि यह टार्च अँधेरे को पूरी तरह भगा देगी: प्रकाश की गारंटी का भ्रम
अँधेरा	बाहर का (रात, साँप, शेर) और भीतर का (आत्मा का अंधकार, भय, पीड़ा): दोनों का डर बेचा जाता है
दाढ़ी, लंबा कुरता, रेशमी वस्त्र	संतत्व का बाहरी दिखावा, वेश बदलकर धंधा
सनातन कंपनी	धर्म के नाम पर ठगी का पुराना, स्थायी धंधा

दोनों धंधों में अंतर (NCERT 5) ★★★

'सूरज छाप' टार्च	भीतर के अँधेरे की टार्च
बाहर के अँधेरे (रात, साँप) का डर	आत्मा के अंधकार, भय, पीड़ा का डर
सीधे, साफ़ ढंग से बात	रहस्यमय, गुरु-गंभीर वाणी
ठोस वस्तु, दिखाई देने वाली	सूक्ष्म, अदृश्य; 'कोई दुकान बाज़ार में नहीं'
कम कमाई, घूम-घूमकर बेचना	'कीमत बहुत मिल जाती है': बँगला, कार, वैभव
चौराहे-मैदान, साधारण विक्रेता	मंच, लाउडस्पीकर, हज़ारों श्रद्धालु: 'साधु, दार्शनिक, संत'
ग्राहक को कुछ तो मिलता है	ग्राहक को केवल भ्रम; आस्था का शोषण

समानता: दोनों लोगों को **डराकर** बेचते हैं: 'अगर वह लोगों को अँधेरे का डर दिखाता है, तो ज़रूर अपनी कंपनी का टार्च बेचना चाहता है।'

व्यंग्य के मुख्य बिंदु

- आस्था का बाज़ारीकरण:** धर्म और अध्यात्म को व्यापार बना देना; संत 'टार्च के व्यापारी' हैं।
- धार्मिक पाखंड:** वेश (दाढ़ी, केश, रेशमी वस्त्र), गुरु-गंभीर वाणी, 'फ़िल्मों के संत' जैसा रूप; ड्राइवर के सामने बात न करना: दोहरा चरित्र।
- भय का व्यापार:** 'आदमी को डराना कितना आसान है!' भर-दोपहर में लोग अँधेरे के डर से काँपते हैं।
- अंधश्रद्धा:** हज़ारों नर-नारी 'स्तब्ध' सुनते हैं; हँसने वाले को धक्का देकर भगा देते हैं।
- पैसे की लिप्सा:** 'पैसा कैसे पैदा करें?' आसमान छूता सवाल; उसके 'पाँव ज़मीन में गहरे गड़े हैं'।
- ईमानदार धंधे से बेईमान धंधे की ओर:** टार्च वाला भी अधिक लाभ देखकर 'कंपनी बदल' लेता है: नैतिक पतन।

'जिसकी आत्मा में प्रकाश फैल जाता है, वह इसी तरह हरामखोरी पर उतर आता है': लेखक का व्यंग्य: संन्यास लेने वाले कई लोग बिना श्रम के दूसरों की कमाई पर जीते हैं; 'आत्मा का प्रकाश' कामचोरी का बहाना बन जाता है।

★ **परीक्षा-सुझाव: भाषा-शैली:** व्यंग्यात्मक, संवादात्मक; बोलचाल के शब्द (हरामखोरी, साले, फिलासफ़ी मत बघार); तत्सम शब्दों का व्यंग्यार्थ प्रयोग (सर्वग्राही, शाश्वत, सनातन, आह्वान); मुहावरे (ठिकाने पर लाना, हाथ फेरना); **मानवीकरण** (सवाल के पाँव, सवाल की टाँग पकड़ना); **कथा के भीतर कथा** (फ़्लैशबैक); अंत में चौंकाने वाला व्यंग्य।

NCERT अभ्यास, पूरी तरह हल

1. लेखक ने टार्च बेचने वाली कंपनी का नाम 'सूरज छाप' ही क्यों रखा?

उत्तर: सूरज प्रकाश का सबसे बड़ा और शाश्वत स्रोत है, जो सारे संसार का अंधकार दूर कर देता है। 'सूरज छाप' नाम से ग्राहकों के मन में यह विश्वास पैदा होता है कि यह टार्च सूरज जैसा तेज़ प्रकाश देगी और हर अंधेरा भगा देगी। यह नाम **आकर्षक, प्रभावशाली** और ग्राहक को लुभाने वाला है; साथ ही व्यंग्य भी है कि छोटी-सी टार्च को 'सूरज' बताकर बेचा जा रहा है।

2. पाँच साल बाद दोनों दोस्तों की मुलाकात किन परिस्थितियों में और कहाँ होती है?

उत्तर: वादे के अनुसार टार्च वाला ठीक पाँच साल बाद तय जगह पहुँचा, पर दोस्त नहीं आया। वह उसे खोजने निकला। एक शाम एक शहर की सड़क पर उसने रोशनी से जगमगाता मैदान, सजा मंच और लाउडस्पीकर देखे; हजारों नर-नारी श्रद्धा से झुके बैठे थे। मंच पर रेशमी वस्त्रों, लंबी दाढ़ी और केशों वाले 'भव्य पुरुष' प्रवचन दे रहे थे। प्रवचन के बाद जब वे कार पर चढ़ रहे थे, तब पास से देखने पर दोनों ने एक-दूसरे को पहचाना; भव्य पुरुष उसे कार में बिठाकर अपने बँगले ले गए।

3. पहला दोस्त मंच पर किस रूप में था और वह किस अंधेरे को दूर करने के लिए टार्च बेच रहा था?

उत्तर: पहला दोस्त मंच पर **साधु, संत, दार्शनिक** के रूप में था: रेशमी वस्त्र, पुष्ट शरीर, सँवारी हुई लंबी दाढ़ी, पीठ पर लहराते केश, गुरु-गंभीर वाणी। वह मनुष्य की **आत्मा के भीतर के अंधेरे** (भय, पीड़ा, पथभ्रष्टता, ज्योतिहीन अंतर्दृष्टि) को दूर करने के नाम पर 'टार्च' बेच रहा था, यानी अपने 'साधना मंदिर' में बुलाकर लोगों की आस्था से धन कमा रहा था।

4. भव्य पुरुष ने कहा: 'जहाँ अंधकार है वहीं प्रकाश है'। इसका क्या तात्पर्य है?

उत्तर: सामान्य अर्थ में: अंधकार और प्रकाश साथ-साथ हैं; निराशा के बीच भी आशा की किरण होती है; मनुष्य के भीतर ही ज्ञान का प्रकाश छिपा है, उसे जगाना होता है। पर **व्यंग्य के संदर्भ में**, भव्य पुरुष पहले लोगों को अंधकार का भय दिखाता है और फिर स्वयं को उस प्रकाश का स्रोत बताकर 'साधना मंदिर' बुलाता है: यानी डर पैदा करके उसका समाधान बेचना। यह वाक्य उसके धंधे की चतुर रणनीति है।

5. भीतर के अंधेरे की टार्च बेचने और 'सूरज छाप' टार्च बेचने के धंधे में क्या फ़र्क है?

उत्तर: पिछले पृष्ठ की तालिका देखें। **संक्षेप में:** सूरज छाप टार्च बाहर के अंधेरे का डर दिखाकर सीधे ढंग से बेची जाने वाली ठोस वस्तु है, जिससे थोड़ी कमाई होती है; भीतर के अंधेरे की टार्च आत्मा के अंधकार का भय दिखाकर रहस्यमय ढंग से बेची जाने वाली सूक्ष्म, अदृश्य 'वस्तु' है, जिसकी कोई दुकान नहीं, पर कीमत बहुत मिलती है (बँगला, कार, वैभव)। दोनों में समानता: डर का व्यापार।

6. 'सवाल के पाँव ज़मीन में गहरे गड़े हैं। यह उखड़ेगा नहीं।' इस कथन में मनुष्य की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत है और क्यों?

उत्तर: यहाँ मनुष्य की **समस्या से बचने, उसे टालने** की प्रवृत्ति की ओर संकेत है। 'पैसा कैसे पैदा करें?' का सवाल बहुत कठिन और स्थायी है; दोनों दोस्त पहले उसे 'हटाने' और फिर 'टालने' का प्रयास करते हैं, पर वह बार-बार सामने आ खड़ा होता है। इससे यह भी पता चलता है कि आजीविका और धन की समस्या मनुष्य के जीवन में गहरी जमी है; बिना परिश्रम उसे टाला नहीं जा सकता। लेखक ने 'सवाल' का मानवीकरण कर इस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है।

7. 'व्यंग्य विधा में भाषा सबसे धारदार है।' इस रचना के आधार पर पक्ष में विचार दीजिए।

उत्तर: परसाई की भाषा सीधी चोट करती है: 'जिसकी आत्मा में प्रकाश फैल जाता है, वह इसी तरह हरामखोरी पर उतर आता है'; 'आदमी को डराना कितना आसान है!'; 'तुम कुछ भी कहलाओ, बेचते तुम टार्च हो'; 'बस कंपनी बदल रहा हूँ।' भव्य पुरुष के प्रवचन में तत्सम शब्दों (सर्वग्राही, शाश्वत, ज्योतिहीन) का ढेर उसके आडंबर को उजागर करता है, जबकि टार्च वाले की बोलचाल (साले, फिलासफ़ी मत बघार) उस आडंबर की पोल खोलती है। छोटे वाक्य, विरोधाभास और अप्रत्याशित अंत व्यंग्य को धारदार बनाते हैं।

8. आशय स्पष्ट कीजिए:

उत्तर: (क) क्या पैसा कमाने के लिए मनुष्य कुछ भी कर सकता है? पाठ दिखाता है कि पैसे की लालसा में मनुष्य धर्म, अध्यात्म और लोगों की आस्था तक को बेचने लगता है; दोस्त संत बनकर और टार्च वाला ईमानदार धंधा छोड़कर पाखंड अपना लेता है। हाँ, लालची मनुष्य नैतिकता छोड़कर कुछ भी कर सकता है; यही लेखक की चिंता है।

(ख) प्रकाश बाहर नहीं है, उसे अंतर में खोजो....: भव्य पुरुष कहता है कि ज्ञान और शांति का प्रकाश मनुष्य के भीतर है, उसे जगाना है; पर वह इसे जगाने के लिए अपने 'साधना मंदिर' बुलाता है: आध्यात्मिक सत्य को धंधे का साधन बनाना।

(ग) धंधा वही करूँगा, यानी टार्च बेचूँगा। बस कंपनी बदल रहा हूँ: टार्च वाला भी अब लोगों को डराकर ही कमाएगा, पर 'सूरज छाप' टार्च के बजाय धर्म-अध्यात्म (आत्मा की टार्च) बेचेगा: पाखंडी संतों की नई पीढ़ी तैयार होने पर तीखा व्यंग्य।

9. लेखक ने 'सूरज छाप' टार्च की पेटी नदी में क्यों फेंक दी? क्या आप भी वही करते?

उत्तर: दोस्त के पास दो दिन रहकर उसने देखा कि आत्मा की टार्च (धर्म का धंधा) में बिना माल के बहुत कमाई है; इसलिए पुराना धंधा छोड़ने के लिए पेटी फेंक दी। **मेरा मत:** मैं ऐसा नहीं करता; लोगों की आस्था और डर का शोषण करके कमाना अनैतिक है। ईमानदार श्रम से कम कमाई भी सम्मानजनक है।

10. टार्च बेचने वाले किस प्रकार की स्किल का प्रयोग करते हैं? क्या इसका 'स्किल इंडिया' से कोई संबंध है?

उत्तर: वे **वाक्-कौशल, नाटकीय प्रस्तुति, ग्राहक-मनोविज्ञान और विपणन (मार्केटिंग)** का प्रयोग करते हैं: भीड़ जुटाना, समस्या (डर) को बढ़ा-चढ़ाकर बताना, फिर उत्पाद को समाधान बताना। 'स्किल इंडिया' भी संचार और बिक्री-कौशल सिखाता है, पर उसका उद्देश्य **ईमानदार** रोज़गार है; कौशल का उपयोग लोगों को ठगने में नहीं, सही जानकारी देकर सेवा करने में होना चाहिए।

सप्रसंग व्याख्या (6 अंक, 100 शब्द)

गद्यांश 1 ★★ 'मैंने कहा, "तुम कुछ भी कहलाओ, बेचते तुम टार्च हो। तुम्हारे और मेरे प्रवचन एक जैसे हैं। चाहे कोई दार्शनिक बने, संत बने या साधु बने, अगर वह लोगों को अँधेरे का डर दिखाता है, तो ज़रूर अपनी कंपनी का टार्च बेचना चाहता है। तुम जैसे लोगों के लिए हमेशा ही अंधकार छाया रहता है। बताओ, तुम्हारे जैसे किसी आदमी ने हज़ारों में कभी भी यह कहा है कि आज दुनिया में प्रकाश फैला है? कभी नहीं कहा। क्यों? इसलिए कि उन्हें अपनी कंपनी का टार्च बेचना है।'"

[6]

उत्तर: संदर्भ (1): प्रस्तुत गद्यांश **हरिशंकर परसाई** के व्यंग्य '**टार्च बेचनेवाले**' से लिया गया है, जो **अंतरा भाग 1** में संकलित है।

प्रसंग (1): बँगले पर पहुँचकर भव्य पुरुष (दोस्त) कहता है कि वह टार्च क्यों बेचेगा, वह तो साधु, दार्शनिक, संत कहलाता है; तब टार्च वाला उसे जवाब देता है।

व्याख्या (3): टार्च वाला कहता है कि तुम चाहे अपने को कुछ भी कहो, असल में तुम भी टार्च ही बेचते हो। हम दोनों के भाषण एक जैसे हैं: पहले लोगों को अँधेरे का डर दिखाओ, फिर प्रकाश बेचो। जो भी साधु-संत-दार्शनिक लोगों को अँधेरे (पाप, भय, कलियुग) से डराता है, उसका उद्देश्य अपना 'माल' बेचना होता है। ऐसे लोगों को दुनिया में सदा अंधकार ही दिखता है; इनमें से किसी ने कभी नहीं कहा कि दुनिया में प्रकाश फैला है, क्योंकि ऐसा कहने पर उनका धंधा ही बंद हो जाएगा।

विशेष (1): (1) धार्मिक पाखंड और **आस्था के बाज़ारीकरण** पर तीखा व्यंग्य; (2) प्रश्नोत्तर शैली ('क्यों? इसलिए कि...'); (3) 'टार्च', 'कंपनी', 'अँधेरा' के प्रतीकार्थ; (4) सरल, बोलचाल की, धारदार भाषा।

गद्यांश 2 ★★ 'भाइयों और बहनो, डरो मत। जहाँ अंधकार है, वहीं प्रकाश है। अंधकार में प्रकाश की किरण है, जैसे प्रकाश में अंधकार की किंचित कालिमा है। प्रकाश भी है। प्रकाश बाहर नहीं है, उसे अंतर में खोजो। अंतर में बुझी उस ज्योति को जगाओ। मैं तुम सबका उस ज्योति को जगाने के लिए आह्वान करता हूँ।... हमारे 'साधना मंदिर' में आकर उस ज्योति को अपने भीतर जगाओ।'

[6]

उत्तर: संदर्भ (1): पाठ '**टार्च बेचनेवाले**', लेखक **हरिशंकर परसाई**, अंतरा भाग 1।

प्रसंग (1): टार्च वाला दोस्त को खोजते हुए एक शहर के मैदान में पहुँचता है, जहाँ मंच पर भव्य पुरुष हज़ारों

श्रद्धालुओं के सामने आत्मा के अंधकार पर प्रवचन दे रहे हैं; यह प्रवचन का अंतिम भाग है।

व्याख्या (3): भव्य पुरुष पहले लोगों को डराता है कि युग अंधकारमय है, आत्मा भय और पीड़ा से त्रस्त है। फिर ढाढ़स बँधाता है कि डरो मत, अंधकार के साथ प्रकाश भी है; प्रकाश बाहर नहीं, मनुष्य के भीतर है, उसकी बुझी ज्योति जगानी है। अंत में असली बात कहता है: इस ज्योति को जगाने के लिए हमारे 'साधना मंदिर' आओ। यानी डर दिखाकर अपने आश्रम (दुकान) के ग्राहक बनाना, ठीक वैसे ही जैसे टार्च वाला 'सूरज छाप टार्च खरीदो' कहता था।

विशेष (1): (1) तत्सम, आडंबरपूर्ण भाषा (किंचित, कालिमा, आह्वान, शाश्वत) से संत के **पाखंड** का उद्घाटन; (2) अंधकार-प्रकाश का विरोधाभास; (3) प्रवचन-शैली की नकल में व्यंग्य; (4) 'साधना मंदिर' = दुकान।

★ **परीक्षा-सुझाव: अंतिम वाक्य (व्याख्या/आशय के लिए):** 'धंधा वही करूँगा, यानी टार्च बेचूँगा। बस कंपनी बदल रहा हूँ।' टार्च वाला अब दाढ़ी बढ़ाकर संत बनने की तैयारी में है ('एक महीने की देर और है'); पाखंड की परंपरा आगे बढ़ती है: 'सनातन कंपनी'।

परीक्षा-शैली प्रश्न, हल सहित CBSE 002 पैटर्न

प्रश्न 11 शैली: 5 MCQ

'''आजकल सब जगह अँधेरा छाया रहता है। रातें बेहद काली होती हैं। अपना ही हाथ नहीं सूझता। आदमी को रास्ता नहीं दिखता। वह भटक जाता है।... अँधेरा घर में भी है। आदमी रात को पेशाब करने उठता है और साँप पर उसका पाँव पड़ जाता है। साँप उसे डँस लेता है और वह मर जाता है।'' आपने तो देखा ही है साहब, कि लोग मेरी बातें सुनकर कैसे डर जाते थे। भर-दोपहर में वे अँधेरे के डर से काँपने लगते थे। आदमी को डराना कितना आसान है!'

उत्तर: (i) वक्ता का उद्देश्य: (A) लोगों को सावधान करना (B) **डर पैदा करके टार्च बेचना** (C) कहानी सुनाना (D) साँपों की जानकारी देना → **(B)**

(ii) 'भर-दोपहर में वे अँधेरे के डर से काँपने लगते थे' में व्यंग्य: (A) दोपहर में अँधेरा होता था (B) **लोग इतने भोले हैं कि उजाले में भी डर जाते हैं** (C) लोग बीमार थे (D) मौसम ठंडा था → **(B)**

(iii) 'आदमी को डराना कितना आसान है!' वाक्य का प्रकार: (A) प्रश्नवाचक (B) **विस्मयादिबोधक** (C) आज्ञावाचक (D) निषेधवाचक → **(B)**

(iv) गद्यांश में कौन-सी शैली है? (A) **नाटकीय/भाषण शैली** (B) पत्र शैली (C) डायरी शैली (D) आत्मकथा → **(A)**

(v) 'अपना ही हाथ नहीं सूझता' का आशय: (A) हाथ में चोट (B) **घना अँधेरा** (C) अंधापन (D) थकान → **(B)**

प्रश्न 12 शैली (2 अंक): दोनों दोस्तों ने किस्मत आजमाने अलग-अलग दिशाओं में जाने का निर्णय क्यों लिया?

उत्तर: टार्च वाले ने कहा कि किस्मत आजमाने वालों की जितनी पुरानी कथाएँ उसने पढ़ी हैं, सबमें वे अलग-अलग दिशाओं में जाते हैं; साथ जाने में '**किस्मतों के टकराकर टूटने**' का डर रहता है। इसलिए वे अलग-अलग निकले और पाँच साल बाद उसी तारीख को उसी जगह मिलने का वादा किया। (यहाँ लोककथाओं पर हल्का व्यंग्य है।)

प्रश्न 12 शैली (2 अंक): भव्य पुरुष ने कार में बातचीत करने से क्यों मना किया?

उत्तर: कार में ड्राइवर था; भव्य पुरुष नहीं चाहता था कि उसका पुराना साथी उसके असली अतीत (साधारण आदमी, पैसे के लिए भटकने वाला) या धंधे का रहस्य ड्राइवर के सामने खोल दे। इसलिए उसने कहा: 'बँगले तक कोई बातचीत नहीं होगी। वहीं ज्ञान-चर्चा होगी।' यह उसके **दोहरे चरित्र** और पाखंड को दिखाता है।

प्रश्न 12 शैली (2 अंक): 'मेरी कंपनी नयी नहीं है, सनातन है': इस कथन का व्यंग्यार्थ लिखिए।

उत्तर: 'सनातन' का अर्थ है सदा से चला आने वाला। भव्य पुरुष स्वीकार करता है कि धर्म और अध्यात्म के नाम पर लोगों को डराकर धन कमाने का धंधा बहुत पुराना है; यह 'कंपनी' युगों से चल रही है और चलती रहेगी। 'सनातन धर्म' शब्द से जोड़कर लेखक ने धर्म के **व्यावसायिक दुरुपयोग** पर करारा व्यंग्य किया है।

दीर्घ उत्तर (100 शब्द): 'पैसा कमाने की लिप्सा ने आध्यात्मिकता को भी व्यापार बना दिया है': 'टार्च बेचनेवाले' के आधार पर विचार कीजिए।

उत्तर: पाठ का भव्य पुरुष आध्यात्मिकता का व्यापारी है: आत्मा के अंधकार का भय दिखाकर लोगों को 'साधना मंदिर' बुलाता है और बैंगला, कार, रेशमी वस्त्रों का वैभव जुटाता है। उसकी 'टार्च' अदृश्य है, पर कीमत बहुत मिलती है। टार्च वाला भी अधिक लाभ देखकर यही धंधा अपनाने चल पड़ता है। आज भी कई ढोंगी बाबा, चमत्कार, ताबीज़, महँगे अनुष्ठान आस्था का शोषण करते हैं। सच्ची आध्यात्मिकता त्याग, सेवा और आत्मचिंतन है; उसे बाज़ार बनाना समाज के साथ छल है। जागरूकता, वैज्ञानिक सोच और विवेक से ही इससे बचा जा सकता है।

अभ्यास सेट: स्वयं को परखें परीक्षा-शैली

A. रिक्त स्थान भरिए (1 अंक)

1. टार्च वाला पहले _____ पर टार्च बेचा करता था।
2. टार्च की कंपनी का नाम _____ था।
3. दोनों दोस्त _____ साल बाद मिलने वाले थे।
4. भव्य पुरुष लोगों को _____ में बुलाता था।
5. टार्च वाले ने टार्च की पेटी _____ में फेंक दी।
6. 'मेरी कंपनी नहीं है, _____ है।'।
7. परसाई ने जबलपुर से _____ पत्रिका निकाली।
8. परसाई _____ विधा के प्रमुख लेखक हैं।

B. सही या गलत (1 अंक)

1. दोनों दोस्त साथ-साथ किस्मत आजमाने गए।
2. दोस्त तय समय पर तय जगह पहुँचा।
3. प्रवचन सुनकर टार्च वाले को हँसी आई।
4. भव्य पुरुष ने कार में खूब बातें कीं।
5. भव्य पुरुष ने अंत में माना कि वह भी टार्च बेचता है।
6. टार्च वाला अब ईमानदार धंधा करेगा।
7. 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' परसाई की रचना है।
8. भव्य पुरुष फ़िल्मों के संत जैसे लग रहे थे।

C. अति लघु उत्तरीय (1 अंक)

1. 'सर्वग्राही' का अर्थ लिखिए।
2. 'शाश्वत' का अर्थ लिखिए।
3. 'आह्वान' का अर्थ लिखिए।
4. 'स्तब्ध' का अर्थ लिखिए।
5. दोनों दोस्तों के सामने कौन-सा सवाल था?
6. टार्च वाले ने दाढ़ी क्यों बढ़ाई?
7. परसाई का जन्म कहाँ हुआ?
8. परसाई के किसी एक व्यंग्य-संग्रह का नाम लिखिए।

D. लघु उत्तरीय (2 अंक)

1. टार्च वाला लोगों को टार्च कैसे बेचता था?
2. भव्य पुरुष का बाहरी रूप कैसा था?
3. प्रवचन सुनकर टार्च वाले को हँसी क्यों आई?

4. टार्च वाले ने दोस्त के धंधे को कैसे पहचान लिया?
5. 'परिवर्तन जीवन का अनंत क्रम है' कहने वाले पर लेखक ने क्या प्रतिक्रिया दी?
6. लेखक ने टार्च वाले से कौन-कौन से अनुमान लगाए?
7. 'एक महीने की देर और है' का संकेत स्पष्ट कीजिए।
8. पाठ का शीर्षक बहुवचन 'टार्च बेचनेवाले' क्यों है?

E. विचारात्मक (3 अंक, 60 शब्द)

1. 'टार्च बेचनेवाले' में व्यंग्य के प्रमुख बिंदु लिखिए।
2. भव्य पुरुष का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3. पाठ में 'भय का व्यापार' कैसे दिखाया गया है?
4. परसाई की भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए।

F. HOTS / योग्यता-विस्तार

1. समाज में फैले किन्हीं तीन अंधविश्वासों पर टिप्पणी लिखिए।
2. आज विज्ञापन किस तरह 'डर' दिखाकर उत्पाद बेचते हैं? दो उदाहरण दीजिए।

शब्दार्थ (NCERT)

गुरु गंभीर वाणी: विचारों से पुष्ट वाणी · सर्वग्राही: सबको समाहित करने वाला · स्तब्ध: हैरान · आह्वान: पुकारना · शाश्वत: चिरंतन, हमेशा रहने वाली · सनातन: सदैव रहने वाला

बहुविकल्पी प्रश्न: 20 MCQs

1. 'टार्च बेचनेवाले' के लेखक: (A) शरद जोशी (B) श्रीलाल शुक्ल (C) हरिशंकर परसाई (D) अमरकांत
2. पाठ की विधा: (A) व्यंग्य (B) कहानी (C) संस्मरण (D) निबंध
3. टार्च वाला बदले रूप में कैसा दिखा? (A) सूट-बूट में (B) वर्दी में (C) धोती-कुरते में (D) दाढ़ी बढ़ाए, लंबा कुरता पहने
4. 'अब तो आत्मा के भीतर ___ जल उठा है': (A) दीया (B) टार्च (C) मशाल (D) बल्ब
5. दोनों दोस्तों के सामने खड़ा सवाल: (A) कहाँ जाएँ? (B) पैसा कैसे पैदा करें? (C) क्या पढ़ें? (D) शादी कब करें?
6. दोस्तों ने कितने वर्ष बाद मिलने का वादा किया? (A) दस (B) सात (C) तीन (D) पाँच
7. टार्च वाला लोगों को किसका डर दिखाता था? (A) अँधेरे, साँप, शेर-चीतों (B) बाढ़ (C) चोर (D) भूत
8. भव्य पुरुष किसके संत जैसे लग रहे थे? (A) पुराणों (B) हिमालय (C) फ़िल्मों (D) गाँव
9. भव्य पुरुष के अनुसार आज मनुष्य कहाँ है? (A) बाज़ार में (B) प्रकाश में (C) स्वर्ग में (D) घने अंधकार में
10. भव्य पुरुष लोगों को कहाँ बुलाता है? (A) मंदिर (B) साधना मंदिर (C) आश्रम (D) मठ
11. प्रवचन के दौरान हँसने पर टार्च वाले के साथ क्या हुआ? (A) सम्मान (B) पुरस्कार (C) धक्का देकर भगा दिया (D) मंच पर बुलाया
12. भव्य पुरुष ने बँगले तक बातचीत क्यों टाली? (A) ड्राइवर था (B) थके थे (C) मौन व्रत (D) फ़ोन आया
13. 'परिवर्तन जीवन का ___ क्रम है': (A) छोटा (B) अनंत (C) नया (D) व्यर्थ
14. भव्य पुरुष की टार्च की दुकान: (A) बाज़ार में (B) शहर में (C) बाज़ार में नहीं, सूक्ष्म (D) ऑनलाइन
15. टार्च वाला दोस्त के पास कितने दिन रहा? (A) एक (B) पाँच (C) सात (D) दो

16. 'बस कंपनी बदल रहा हूँ' का आशय:
(A) धर्म के नाम पर डर बेचना (B) नई टार्च कंपनी (C) नौकरी (D) विदेश जाना
17. 'हरामखोरी' शब्द किस संदर्भ में आया?
(A) संन्यास लेने वालों के आलस्य पर व्यंग्य (B) चोरी (C) व्यापार (D) राजनीति
18. परसाई ने स्वतंत्र लेखन कब से शुरू किया?
(A) 1950 (B) 1960 (C) 1935 (D) 1947
19. 'विकलांग श्रद्धा का दौर' किस विधा की कृति है?
(A) उपन्यास (B) व्यंग्य-लेख (C) कविता (D) नाटक
20. पाठ का केंद्रीय व्यंग्य:
(A) शिक्षा व्यवस्था (B) राजनीति (C) आस्था का बाज़ारीकरण, धार्मिक पाखंड (D) पुलिस
- 1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

- कथन: टार्च वाला लोगों को अँधेरे का डर दिखाता था। कारण: डरे हुए लोग आसानी से टार्च खरीद लेते थे।
- कथन: भव्य पुरुष भी 'टार्च' बेचता था। कारण: वह लोगों को आत्मा के अंधकार का डर दिखाकर साधना मंदिर बुलाता था।
- कथन: भव्य पुरुष ने कार में ही सारी बातें बता दीं। कारण: कार में ड्राइवर मौजूद था।
- कथन: टार्च वाला अब ईमानदारी से टार्च बेचेगा। कारण: उसने सूरज छाप टार्च की पेटी नदी में फेंक दी।
- कथन: 'सूरज छाप' नाम ग्राहकों को आकर्षित करता है। कारण: सूरज प्रकाश का सबसे बड़ा स्रोत है।
- कथन: परसाई ने व्यंग्य को साहित्यिक प्रतिष्ठा दी। कारण: परसाई ने नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. किया।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (D) · 5 (A) · 6 (B)

उत्तर

- A.** 1. चौराहों 2. सूरज छाप 3. पाँच 4. साधना मंदिर 5. नदी 6. सनातन 7. वसुधा 8. व्यंग्य
- B.** 1. गलत (अलग-अलग) 2. गलत (नहीं आया) 3. सही 4. गलत (बँगले तक चुप) 5. सही ('तेरी बात ठीक ही है') 6. गलत (कंपनी बदल रहा है) 7. सही 8. सही
- C.** 1. सबको समाहित करने वाला 2. हमेशा रहने वाला 3. पुकारना, बुलाना 4. हैरान 5. पैसा कैसे पैदा करें? 6. संत का वेश बनाकर आत्मा की टार्च बेचने के लिए 7. जमानी, होशंगाबाद (म.प्र.) 8. ठिठुरता हुआ गणतंत्र
- D.** 1. चौराहे पर भीड़ जुटाकर नाटकीय ढंग से अँधेरे, साँप, शेर का डर दिखाता, फिर 'सूरज छाप' को समाधान बताता। 2. रेशमी वस्त्र, पुष्ट शरीर, सँवारी लंबी दाढ़ी, पीठ पर लंबे केश; गुरु-गंभीर वाणी। 3. वह जानता था कि यह भी उसके जैसा ही डर दिखाकर बेचने वाला भाषण है। 4. दोनों की बातें एक-सी थीं: अँधेरे का डर, फिर प्रकाश का प्रस्ताव। 5. 'साले, फिलासफ़ी मत बघार', सीधे पूछा कि दौलत कैसे कमाई। 6. बीवी ने त्यागा? उधार बंद? साहूकार तंग? चोरी में फँसे? 7. दाढ़ी पूरी बढ़ने पर वह भी संत बनकर धंधा शुरू करेगा। 8. दोनों दोस्त (और ऐसे सभी पाखंडी) टार्च बेचने वाले हैं।
- E.** 1. आस्था का बाज़ारीकरण, धार्मिक पाखंड, भय का व्यापार, अंधश्रद्धा, पैसे की लिप्सा, नैतिक पतन। 2. पाखंडी, चतुर वक्ता, वैभवशाली, दोहरे चरित्र वाला, धनलोलुप, अंत में सच स्वीकारने वाला। 3. बाहर का अँधेरा (साँप, रात) और भीतर का अँधेरा (आत्मा) दिखाकर दोनों ने कमाई की। 4. व्यंग्यात्मक, संवादात्मक, बोलचाल, तत्सम का व्यंग्यार्थ, मानवीकरण, कथा में कथा।
- F.** स्वतंत्र उत्तर (उदाहरण: बीमा/सुरक्षा-उपकरण, 'कीटाणु' वाले साबुन-विज्ञापन)।

अंतिम-रात सारांश (परीक्षा से पहले)

- परसाई (1922–1995), जमानी (होशंगाबाद); वसुधा; व्यंग्य को प्रतिष्ठा; ठिठुरता हुआ गणतंत्र, विकलांग श्रद्धा का दौर, सदाचार की तावीज़; परसाई रचनावली (6 भाग)।
- टार्च वाला: दाढ़ी, लंबा कुरता; 'आत्मा के भीतर टार्च'; लेखक: 'हरामखोरी पर उतर आता है'।
- फ़्लैशबैक: 'पैसा कैसे पैदा करें?' (सवाल के पाँव गहरे गड़े); अलग दिशाएँ, 5 साल बाद मिलना; 'सूरज छाप' टार्च: अँधेरा, साँप, शेर-चीते; 'आदमी को डराना कितना आसान है!'
- भव्य पुरुष: फ़िल्मों के संत, रेशमी वस्त्र, दाढ़ी-केश; 'आत्मा में अंधकार'; 'प्रकाश अंतर में खोजो'; साधना मंदिर; ड्राइवर के सामने चुप; बँगला।
- 'तुम कुछ भी कहलाओ, बेचते तुम टार्च हो'; 'मेरी कंपनी सनातन है'; दुकान नहीं, कीमत बहुत; पेटी नदी में; 'धंधा वही... बस कंपनी बदल रहा हूँ'।